DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA (DAVV), INDORE
B.A. FIRST YEAR QUESTION PAPER – 2018
SUB : हिन्दी साहित्य- प्रथम प्रश्नपत्र : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

खण्ड (अ) : वस्तुनिष्ठ Regular 5x1=5/ Private 5x1=5

1. समाज सुधारक कवि किसे कहा जाता है?

   (अ) तुलसी (ब) सूरदास (स) कबीरदास।

2. सूरदास ने किस भाषा में काव्य रचना की है ?

   (अ) अवधी (ब) राजस्थानी (स) ब्रज।

3. तुलसीदास जी के गुरु का नाम बताइये :

   (अ) रामानंद (ब) नरहरिदास (स) वल्लभाचार्य।

4. 'प्रेम की पीर' का कवि किसे कहा जाता है?

   (अ) घनानंद (ब) भूषण (स) बिहारी।

5. भूषण ने किस राजा की प्रशंसा में काव्य रचना की है?

   (अ) महाराणा प्रताप (ब) शिवाजी (स) अकबर।

खण्ड (ब) : लघु उत्तरीय Regular 3x3=9/ Private 3x4=12

1. अमीर खुसरो का जीवन परिचय देते हुए उनकी प्रसिद्ध रचनाओं के नाम बताइये।

(OR) जायसी की काव्य भाषा की विवेचना संक्षिप्त में कीजिये।

2. मीराबाई की रचनाओं का परिचय दीजिये।

(OR) रसखान की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

3. केशर को कठिन काव्य का प्रेत क्यों कहते हैं?

(OR) पद्माकरे के प्रकृति वर्णन की विशेषताएँ बताइये।

खण्ड (स) दीर्घ उत्तरीय Regular =26/Private =33

1. कबीर एक समाज सुधारक विद्रोही संत कवि थे। विवेचना कीजिये।

(OR) विनय पत्रिका भक्ति और समर्पण का काव्य है। इंस कथन की विवेचना कीजिये।"

2. बिहारी के काव्य वैभव पर सारगर्भित लेख लिखिए।

(OR) घनानंद के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से बताइये।

3. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये :

   (अ) सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार ।
   लोचन अनंत उघाडिया, अनंत दिखावणहार।।

राम नाम के पटतरे, देबे को कछु नाहिं ।।

क्या ले गुरु संतोखिए हौंस रही मन माहिं ।।

(OR) ऊधो मन न भए दस बीस

एक हुतौ सो गयौ स्याम संग, को अवराधे ईस

इंद्री सिथिल भई केसव बिंनु, ज्यो देही बिनु सीस

आसा लागि रहति तन स्वासी, जीवहिं कोटी बरीस

तम तो सखा श्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस

सूर हमारे नंद-नंदन बिनु और नहीं जगदीस। Regular 3/ Private 5

(ब) कबहूँ ससि मांगत आरि करै, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरें ।

कबहूँ करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरें ।।

कबहूँ रिसआई कहै हठिकै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरै ।।

अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिर में बिहरें ।

(OR) जगतु जनायौ जिहि सकल, सो हरि जान्यौ नाँहि ।

ज्यों आँखिन सबु देखियै, आँखि ने देखी जाहि ।।

दीरध साँस न लेहि दुख, सुख साईहि न भूलि ।

दई दई क्यों करतु है, दई दई सु कबूलि ।। Regular 3/Priuote 5

(स) झलके अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छवै ।

हंसि बोलनि में छवि फूलन की, वरषा उर ऊपर जाति है ।।

लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि है ।

अंग अंग तरंग उठे दुति की, परिहै मनो रूप अबै धर च्वै ।।

(OR) ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहती हैं।

कंदमूल भोग करै कंदमूल भोग करै

तीन बैर खाती थी वै तीन बेर खाती हैं ।

भूषण सिथिल अंग भूषण सिथिल अंग

बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं ।

भूषण भनत शिवराज बीर तेरे त्रास

नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं ।। Regular 4/ Private 5

DAVV QUESTION PAPERS AND SYLLABUS VISIT http://www.davvonline.com